# प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्रीजेश सिंह यादव** ने मेरे निर्देशन में "मध्यकालीन भारतीय कृषि और कृषक" (सन् 1556 से 1605 ई0) विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा है। शोधकर्त्ता ने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर द्वारा निर्धारित सभी नियमों एवं शर्तों का पालन करते हुए अपना शोध कार्य पूर्ण किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इनके मौलिक चिन्तन एवं अध्ययन का परिणाम है। मैं इसे परीक्षार्थ अग्रसारित करता हूँ।

16.9.05

Principal
K. B. PG. College
MIRZAPUR

विभागाध्यक्ष
(डा० डी० एन० दुबे)
(मध्यकालीन इतिहास विभाग)
के0 बी0 पोस्टग्रेजुएट कॉलेज,
मीरजापुर (उ0 प्र0)

शोध निर्देशक 16/9/05
(डॉ० धर्मजीत सिंह)
प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
के0 बी0 पोस्टग्रेजुएट कॉलेज,
मीरजापुर (उ0 प्र0)

# विवरणिका

**विषय** **पृष्ठ**

1. आमुख पृष्ठ 1
2. निर्देशक का प्रमाण – पत्र 2
3. विवरणिका 3
4. प्रस्तावना 10

## प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

1. कृषि : शब्द और अर्थ 13
2. कृषि : एक वृत्ति 14
3. कृषि : विकास और परम्परा 15
   (क) साहित्यिक साक्ष्य 15
      (1) **वैंदिक काल** – (i) कृषि की भूमि, (ii) भूमि–सेचन, (iii) अन्न, (iv) वृषभ तथा गाय, (v) हलवाहा और किसान, (vi) उपकरण, (vii) खाद, गोबर, चारा और माण; (viii) केदार या खेत; (ix) आपदाएँ, (x) ऋतुएँ।
      (2) **सूत्र काल** – (i) अन्न और वनस्पति, (ii) उपकरण और प्रयोग–विनियोग, (iii) हलाभियोग, (iv) नवशस्येष्टि, (v) वास भूमि।

**कौशिक गृह्यसूत्र में कृषि** 25

(i) हलाभियोजन, (ii) स्फातीकरण, (iii) मैश्रधान्य प्राशन, (iv) बीजारोपण।

(3) रामायण काल 28

(4) महाभारत तथा पुराण काल 29

(5) कौटिल्य काल 31

(i) सीताध्यक्ष, (ii) अन्न और दूसरे उत्पादन, (iii) भूमि का कर्षण और स्वामित्व, (iv) बीज वपन, (v) रक्षा और वृद्धि, (vi) सेंचन और उसके साधन, (vii) कृषि का काल और ग्रह, (viii) धान्योत्पवन और संग्रह, (ix) उपकरण, (x) विष्टि : बेगार, (xi) सीमा और उसका सीमा विवाद।

(6). पाणिनि से पतंजलि तक का काल 36

(7) अमरकोश काल 39

(8) राजतरंगिणी काल 40

(9) कृषि पराशर काल 41

(ख) शिलालेखीय, राजपत्रीय तथा अन्य साक्ष्य 43

भूमि की माप 45

(ग) ऐतिहासिक साक्ष्य 46

अध्याय 1 : सन्दर्भ 51

## द्वितीय अध्याय : मध्यकाल में कृषि एवं कृषकों की दशा

सामान्य परिचय 62

(1) कृषकों का वर्गीकरण 63

(क) खुदकाश्त 63

(ख) पाहीकाश्त 64

(ग) मुजारियान 64

(घ) भूमिहीन 64

(2) कृषि एवं कृषकों की दशा 65

सामान्य परिचय 65

(क) खान – पान 68

(ख) पहनावा 70

(ग) रहन–सहन तथा रीति–रिवाज 71

(घ) अन्य व्यवस्थाएँ 73

(ड.) ग्राम समुदाय 75

(अ) ग्राम समुदाय की अवधारणा, (आ) ग्राम समुदाय के वर्ग, (इ) ग्राम समुदाय की संरचना – 1. जमींदार, 2. खुदकाश्त, 3. पाही, 4. मुजारियान, 5. भूमिहीन, 6. मुकद्दम तथा पटवारी, 7. ग्राम सेवक; (ई) ग्राम समुदाय : आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय 2 : सन्दर्भ 91

## तृतीय अध्याय : मध्यकालीन अर्थ-व्यवस्था में कृषि का योगदान एवं भू-राजस्व

(1) मध्यकालीन अर्थ–व्यवस्था का स्वरूप एवं कृषि का योगदान 95

(क) अर्थ–व्यवस्था के विवेचन–विश्लेषण के प्रयास 95

(ख) अर्थ–व्यवस्था का नामकरण 96

(ग) अर्थ–व्यवस्था की विशेषता 97

(घ) आर्थिक आधार पर भूमि विभाजन 98

भूमि – (1) खालिसा भूमि, (2) जागीर भूमि

(ड.) अर्थ–व्यवस्था में गाँव का सीन 99

(च) कृषक वर्ग 101

(छ) सामाजिक नियम एवं अर्थ–व्यवस्था 102

(ज) जमींदार एवं अर्थ–व्यवस्था 103

(झ) कृषि तकनीक एवं अर्थ–व्यवस्था 104

(ञ) भूमि कर व्यवस्था 105

(ट) कर–निर्धारण की अन्य पद्धतियाँ 107

(ठ) कृषि अर्थ–व्यवस्था और अधिकारीगण 108

(ड) कनकटी एवं अर्थ–व्यवस्था 110

(2) राजकोषीय संसाधन 111

(3) भू–राजस्व प्रणाली 117

भू–राजस्व के आकलन की पद्धतियाँ 122

अध्याय 3 : सन्दर्भ 127

## चतुर्थ अध्याय : मध्यकाल में भूमि एवं कृषि के प्रकार तथा उन पर मालगुजारी

भूमि की विभिन्न श्रेणियाँ 129

(1) पोलज (उत्तम, मध्यम, निकृष्ट) 129

(2) परौती (उत्तम, मध्यम, निकृष्ट) 129

(3) चचर 129

(4) बंजर 129

(5) बारानी 129

(6) सैलानी 129

(1) पोलज भूमि 130

(क) रबी का उपज 130

(ख) खरीफ की उपज 131

(2) परौती भूमि 133

(3) चचर भूमि 133

(4) बंजर भूमि 133

(क) रबी की फसल 133

(ख) खरीफ की फसल 134

- (5) उन्नीस वर्षीय दरें 135
    - (1) आगरा सूबे की रबी फसल 136
    - (2) आगरा सूबे की खरीफ फसल 138
    - (3) इलाहाबाद सूबे की रबी फसल 141
    - (4) इलाहाबाद सूबे की खरीफ फसल 143
    - (5) अवध सूबे की रबी फसल 146
    - (6) अवध सूबे की खरीफ फसल 148
    - (7) दिल्ली सूबे की रबी फसल 150
    - (8) दिल्ली सूबे की खरीफ फसल 152
    - (9) लाहौर सूबे की रबी फसल 155
    - (10) लाहौर सूबे की खरीफ फसल 157
    - (11) मुल्तान सूबे की रबी फसल 160
    - (12) मुल्तान सूबे की खरीफ फसल 163
    - (13) मालवा सूबे की रबी फसल 166
    - (14) मालवा सूबे की खरीफ फसल 168
- (6) दस साला बन्दोबस्त 171
    - (अ) सूबा इलाहाबाद 172
        - (1) इलाहाबाद सूबे की रबी फसल 174
        - (2) इलाहाबाद सूबे की खरीफ फसल 176
    - (आ) सूबा अवध 179
        - (1) अवध सूबे की रबी फसल 180
        - (2) अवध सूबे की खरीफ फसल 183
    - (इ) सूबा आगरा 186
        - (1) आगरा सूबे की रबी फसल 188
        - (2) आगरा सूबे की खरीफ फसल 190
        - (3) आगरा सूबे की रबी फसल का पूरक 192
        - (4) आगरा सूबे की खरीफ फसल का पूरक 195

(ई) अजमेर सूबा 197

  (1) अजमेर सूबा की रबी फसल 199

  (2) अजमेर सूबा की खरीफ फसल 201

(उ) दिल्ली सूबा 203

  (1) दिल्ली सूबे की रबी फसल 205

  (2) दिल्ली सूबे की खरीफ फसल 207

  (3) दिल्ली सूबे की रबी फसल का पूरक 210

  (4) दिल्ली सूबे की खरीफ फसल का पूरक 212

(ऊ) लाहौर सूबा 214

  (1) लाहौर सूबे की रबी फसल 215

  (2) लाहौर सूबे की खरीफ फसल 217

(ए) मालवा सूबा 220

(ऐ) मुल्तान सूबा 220

  (1) मालवा सूबे की रबी फसल 221

  (2) मुल्तान सूबे की रबी फसल 222

  (3) मालवा सूबे की खरीफ फसल 223

  (4) मुल्तान सूबे की खरीफ फसल 224

(7) बारह सूत्रों का विवरण 226

सन्दर्भ 4 : सन्दर्भ 227

## पंचम अध्याय : जमींदार

  (1) जमींदारी अधिकार की प्रकृति 229

  (2) उत्पत्ति, रचना तथा जमींदारी वर्ग की शक्ति 236

  (3) शाही प्रशासन तथा जमींदार 254

  (4) स्वायत्त मुखिया या स्वयं प्रमुख 263

अध्याय 5 : सन्दर्भ 268

## उपसंहार

मध्यकालीन कृषि एवं कृषकों के प्रति शासन की नीतियों एवं योजनाओं की वैधता 277

## सन्दर्भ-सूची

(1) हिन्दी 293
(2) अँगरेज़ी 297
(3) अँगरेज़ी विश्लेषण, जर्नल आदि 300

# प्राक्कथन

व्यक्ति का भौतिक और सांसारिक सुख उसके आर्थिक विकास से प्रभावित होता रहा है। आर्थिक जीवन को उत्प्रेरित करने वाली प्रवृत्तियाँ प्रत्येक युग में सहज रूप से स्वभावतः उद्भूत होती रही हैं, जो समाज को पुष्ट और स्वस्थ बनाने में सक्रिय सहयोग प्रदान करती रही हैं। यहाँ तक कि आर्थिक कार्यक्रम व्यक्ति का मानवीय सम्बन्ध ही नहीं बल्कि सामाजिक सम्बन्ध भी अभिव्यक्त करता है। वांछित वस्तुओं की ग्राह्यता और उनका उपयोग वस्तु के उत्पादन अथवा व्यवस्थित रूप में सुलभता के लिए किए जाने वाले उपभोग तथा उसके प्रयत्न से सम्बन्धित माना जाता है, जो व्यक्ति के मानवीय स्वरूप को उद्घाटित करता है। उसके साथ ही उपयोग तथा उसकी उत्पादित वस्तुएँ और लाभ प्राप्त करने के निमित्त सेवाओं का शोषण भी समाज में होता रहता है। इस प्रकार की प्रक्रियाएँ संसार के सभी वर्गों में समान रूप से विकसित होती हैं। इस प्रकार से मध्यकाल में दक्षिण भारत से लेकर के उत्तर भारत तक, पश्चिम भारत से लेकर के पूर्वी भारत तक के लोगों में सामाजिक जीवन का आधार मुख्यतः आर्थिक था। कहने की आवश्यकता नहीं कि मध्यकालीन सम्पूर्ण अर्थ–व्यवस्था कृषि पर निर्भर थी।

उस समय भारत की अधिकांश जनता ग्रामों में रहती थी और उनका मुख्य व्यवसाय खेती ही था। अतएव सामाजिक अर्थ–व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। उस समय भू–स्वामी होना सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठा का द्योतक माना जाता था।

प्रत्येक वर्ग के लोग भू–स्वामी होना चाहते थे। ग्राम इन्हीं भू–स्वामी कृषकों के समूह थे तथा ग्राम सभा इन्हीं भू–स्वामियों का संगठन होती थी। ग्रामों में भू–स्वामियों के अतिरिक्त कृषि पर आश्रित दूसरे वर्गों के लोग भी रहा करते थे। इनमें

से अधिकांश भाग भूमिहीन मजदूरों का था, जिन्हें खेती में काम करने के बदले उपज का कुछ भाग प्रदान किया जाता था।

आज भी भारत कृषि–प्रधान देश ही समझा जाता है। पंचवर्षीय योजनाओं में अरबों रुपया कृषि की उन्नति के लिए व्यय होता है। जीने के लिए अन्न और अनाज आवश्यक हैं, जो कृषि एवं कृषकों से ही प्राप्त होते हैं। कृषि एवं कृषकों की एक व्यवस्था चली आ रही है। मध्यकाल (1556 से 1605 ई०) जो स्वर्ण काल कहलाता था, उस समय निश्चय ही कृषि एवं उसकी व्यवस्था चरमोन्नति पर थी। अतः उसे जानने, समझने एवं परखने के लिए मैंने ''मध्यकालीन भारतीय कृषि और कृषक'' विषय को चुना। विषय की महत्ता स्वयं स्पष्ट है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय 'प्रस्तावना' में 'कृषि' शब्द का अर्थ बतलाते हुए, यह सिद्ध किया गया है कि मूलतः कृषि एक वृत्ति है। फिर विभिन्न साक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में कृषि के विकास और परम्परा का निरूपण किया गया है। विवरण मुगल काल तक का ही प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है – 'मध्यकाल में कृषि एवं कृषकों की दशा'। इस अध्याय में कृषकों का वर्गीकरण करते हुए कृषि एवं कृषकों की दशा पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही ग्राम समुदाय की अवधारणा पर विचार करते हुए उस पर एक आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

'मध्यकालीन अर्थ–व्यवस्था में कृषि का योगदान एवं भू–राजस्व तृतीय अध्याय का शीर्षक है। इस अध्याय में मध्यकालीन अर्थ–व्यवस्था का स्वरूप एवं विशेषता, आर्थिक आधार पर भूमि–विभाजन , अर्थ–व्यवस्था में गाँव का स्थान, कृषक वर्ग, कृषि–तकनीक, भूमि कर व्यवस्था, अधिकारीगण, राजकोषीय संसाधन, भू राजस्व प्रणाली आदि विषयों पर विचार किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है – 'मध्यकाल में भूमि एवं कृषि के प्रकार तथा उन पर मालगुजारी'। विभिन्न प्रकार की भूमियाँ, उनकी उपज, सूबेवार उपज तथा उन पर मालगुजारी, उन्नीस वर्षीय दरों का 'आइन–ए–अकबरी' के आधार पर आँकड़ा प्रस्तुत किया गया है।

'जमींदार' पंचम अध्याय का शीर्षक है। ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था के विकास में, मध्यकाल में, जमींदारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। राजस्व के प्रशासन के लिए सरकार अधिकांशतः जमींदारों पर निर्भर करती थी। केन्द्रीय सत्ता जब तक़ शक्तिशाली

रही तब तक कृषि लाभदायक रही, किन्तु केन्द्रीय सत्ता के कमजोर पड़ते ही जमींदार शोषक बन बैठे। इस अध्याय में जमींदारों की प्रकृति, शक्ति, शाही प्रशासन और जमींदार आदि विषयों पर विचार किया गया है।

अन्त में उपसंहार है। यहाँ मध्यकालीन कृषि एवं कृषकों के प्रति शासन की नीतियों की वैधता पर विचार किया गया है।

शोध – प्रबन्ध लिखने और प्रस्तुत करने में आदरणीय गुरुवर डॉ० धर्मजीत सिंह की अनुकम्पा को मैं कभी नहीं भुला सकता, क्योंकि जिस कुशलता और सहज भाव से उन्होंने निर्देशन किया, यदि न मिलता तो शायद मैं अब तक शोध – प्रबन्ध नहीं लिख पाता।

आदरणीय पिता श्री गुलाब सिंह यादव तथा माता श्रीमती लक्ष्मी देवी के प्रति आभार ज्ञापित करना तो औपचारिकता मात्र निबाहना होगा, क्योंकि मेरा जो कुछ भी है, सब उन्हीं का दिया हुआ है।

अग्रज श्री राजेश कुमार सिंह यादव का मैं अत्यन्त कृतज्ञ तथा उपकृत हूँ। उन्होंने प्रबन्ध को कम्प्यूटर पर टंकित कराने के लिए आर्थिक सहायता देकर संकट का बहुत बड़ा बोझ हलका कर दिया है।

डॉ० कृष्ण मुरारी सिंह, डॉ० देवेन्द्र दूबे, डॉ० मदन गोपाल श्रीवास्तव, डॉ० अखिलेश्वर जायसवाल, डॉ० सी० पी० राय, डॉ० वीरेन्द्र सिंह, डॉ० डी० पी० साही, डॉ० वैद्यनाथ पाण्डेय, डॉ० अरविन्द मिश्र, डॉ० अमिताभ तिवारी, डॉ० अनिल पाण्डेय, डॉ० राजशेखर शुक्ल, डॉ० रामचन्द्र देव पाण्डेय प्रभृति विद्वानों का आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की।

आशा है, प्रस्तुत शोध कार्य से समाज में संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित होगा। साथ ही भावी अनुसंधित्सुओं को एक नयी दिशा का ज्ञान होगा।

– श्रीजेश सिंह यादव
श्रीजेश सिंह यादव
शोध अध्येता

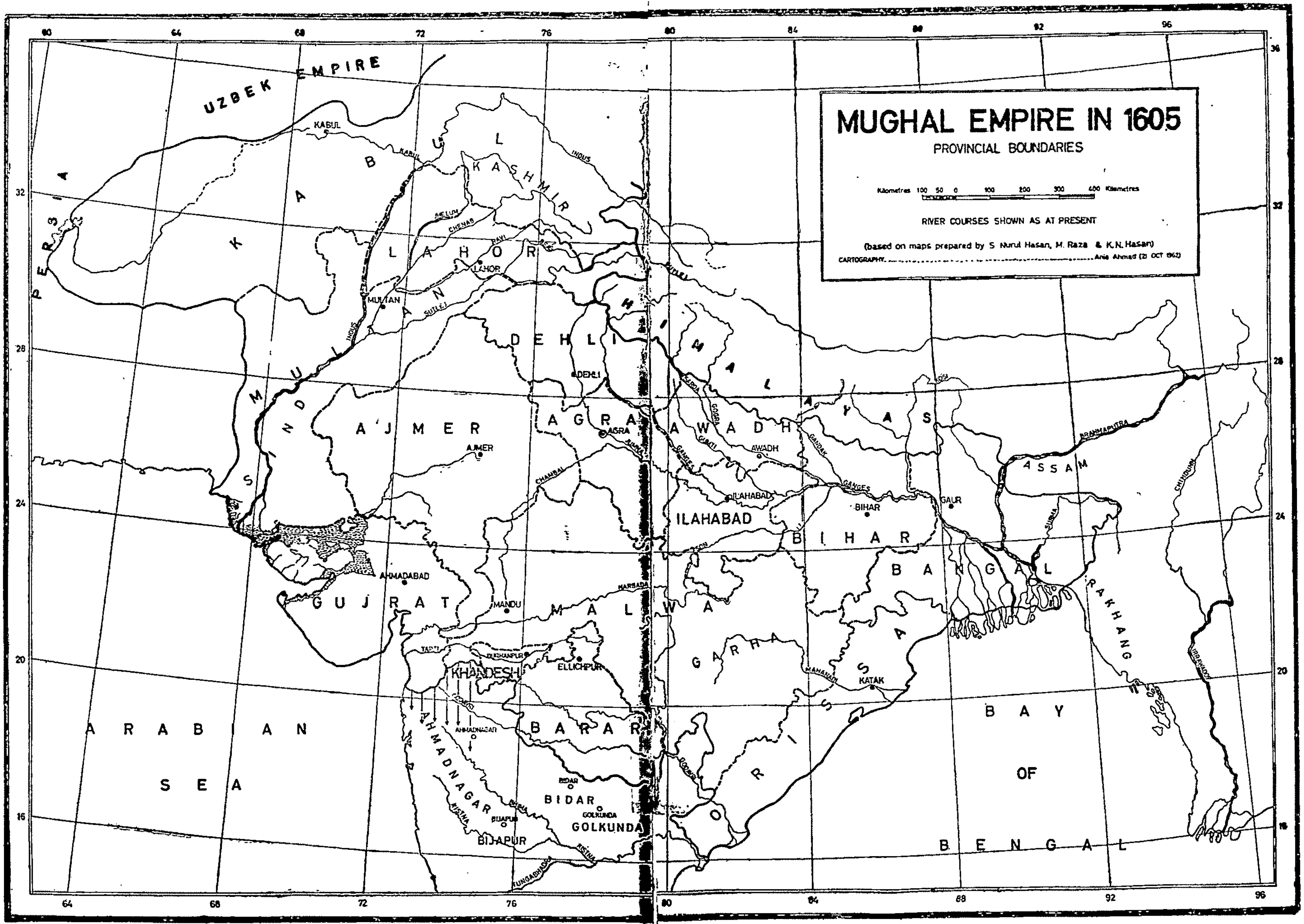
UZBEK EMPIRE
PERSIA
KABUL
KASHMIR
LAHOR
MULTAN
SIND
AJMER
DEHLI
AGRA
AWADH
ILAHABAD
BIHAR
BANGAL
ASSAM
RAKHANG
ORISSA
GARHA
MALWA
GUJRAT
KHANDESH
BARAR
AHMADNAGAR
BIDAR
GOLKUNDA
BIJAPUR
HIMALAYAS
ARABIAN SEA
BAY OF BENGAL
KABUL
LAHOR
MULTAN
DEHLI
AGRA
AJMER
AWADH
ILAHABAD
BIHAR
GAUR
AHMADABAD
MANDU
BURHANPUR
ELLICHPUR
AHMADNAGAR
BIDAR
GOLKUNDA
BIJAPUR
KATAK
INDUS
KABUL
JHELUM
CHENAB
RAVI
SUTLEJ
GANGES
JAMNA
CHAMBAL
SARDA
GOGRA
GUMTI
GANDAK
KOSI
SON
NARBADA
TAPTI
GODAVARI
MAHANADI
BHIMA
KISTNA
TUNGABHADRA
BRAHMAPUTRA
SURMA
CHINDWIN
IRRAWADDY
60
64
68
72
76
80
84
88
92
96
36
32
28
24
20
16
Kilometres 100 50 0 100 200 300 400 Kilometres

# MUGHAL EMPIRE IN 1605

PROVINCIAL BOUNDARIES

RIVER COURSES SHOWN AS AT PRESENT

(based on maps prepared by S. Nurul Hasan, M. Raza & K.N. Hasan)

CARTOGRAPHY………………………………Anis Ahmad (21 OCT 1962)